**सलाह** • कृषि विवि के दलहन वैज्ञानिकों की ओर से राजेंद्र मसूर-1 प्रजाति को विकसित किया गया

# राजेंद्र मसूर-1 खेती के लिए उपयुक्त, किसान इसकी खेती कर 1 हेक्टेयर में प्राप्त कर सकते 18 से 20 क्विंटल उपज

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में आयोजित हुए 14 वीं अनुसंधान परिषद की तीन दिवसीय बैठक में दलहन वैज्ञानिकों के द्वारा कुलपति के नेतृत्व में राजेंद्र मसूर 1 प्रजाति को विकसित किया गया है। मसूर के इस प्रभेद को बिहार के किसान सभी जिलों में लगाकर बेहतर से बेहतर उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। प्रभेद को विकसित करने वाले वैज्ञानिक डॉ. रविकांत, डॉ. माधुरी आर्या, डॉ. एके सिंह तथा डॉ. एसबी मिश्रा आदि वैज्ञानिकों ने बताया कि मसूर के इस प्रभेद से अच्छी पैदावार प्राप्त करने के लिए किसान इसकी बुआई हल्की दोमट मिट्टी वाली भूमि में करें। बुआई से पहले किसान यह ध्यान रखें कि मृदा में नमी धारण की क्षमता काफी अच्छी हो तथा खेत की पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल तथा दूसरी जुताई कल्टीवेटर या रोटावेटर से की गई हों। उन्होंने बताया कि किसान राजेंद्र मसूर 1 से अच्छी पैदावार प्राप्त करने के लिए 30 से 35 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर इसके बीज का बुआई में इस्तेमाल करें। बीज की बुआई जहां सीडड्रिल तकनीक से करना काफी उत्तम होगा। वही सीडड्रिल तकनीक में पंक्ति से पंक्ति की दूरी 30 सेंटीमीटर और पौधे से पौधों की दूरी 10 सेंटीमीटर रखनी चाहिए।

किसानों के खेत में लगी राजेंद्र मसूर-1 की फसल।

## बुआई से पहले बीज को उपचारित करना चाहिए

उन्होंने बताया कि मसूर के इस बीज को फफूंद नाशक, कीटनाशक तथा राइजोबियम से उपचारित करके बुआई करने पर उत्पादन में काफी अच्छे परिणाम आते हैं। उन्होंने बताया कि बुआई से पहले इसके बीज को उपचारित करना बेहद जरूरी होता है। मसूर के इस प्रभेद के बुआई का उपयुक्त समय 15 अक्टूबर से 15 नवंबर तक होता हैं। उन्होंने बताया कि जिस खेत में इसकी बुआई करनी है उसमें उर्वरक के रूप में नाइट्रोजन 20 किलो, फॉस्फोरस 40 किलो, पोटाश 20 किलो तथा सल्फर 20 किलो एक हेक्टेयर खेत में देना चाहिए।

## इस प्रभेद में बहुत अधिक सिंचाई की आवश्यकता नहीं

उन्होंने कहा कि मसूर के इस प्रभेद में बहुत अधिक सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती है। सूखे की स्थिति में हल्की फुहारा वाली सिंचाई एक महीने के अंतराल पर की जा सकती है। उन्होने बताया कि इसकी उपज क्षमता 18 से 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हैं। यह फसल 120 से 125 दिनों में पककर तैयार हो जाती है।

Dainik Bhaskar 07-07-2023